RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 41 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 20 मार्च 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पूर्णागिरी : मेले का असल रंग तो यहाँ है

मीलों की पैदल यात्रा, मुंडन संस्कार, पूर्णामाता और नेपाल सिद्धबाबा के दर्शन

गनीमत है इस मेले का अभी तक महोत्सव बनाकर तथाकथित स्टार प्रदर्शन नहीं हो रहा

कार्यालय प्रतिनिधि

पूर्णागिरी की मेला देश के बड़े मेलों में शुमार है। इसमें आने वाले हाजारों-लाखों श्रद्धालुओं के मन में कामना रहती है कि पहाड़ों में रहने वाली पूर्णागिरी मैय्या के दर्शन कर मनोती मांगी जाए। पूर्णागिरी में दर्शनार्थियों की गणना की जाए तो पहाड़ से कम मैदान से ज्यादा श्रद्धालु पहुँचते हैं। इस बार भी होली के दिन से ही बड़ी संख्या में भक्तजन पूर्णागिरी के दर्शन के लिये आने शुरु हो गये थे। अनुमान है कि मेले के प्रथम दिन ही शक्तिपीठ पूर्णागिरी धाम में 80 हजार दर्शकों ने दर्शन किये।

मेलों की बनावट और मेलों की सजावट के हिसाब से देखें तो पूर्णागिरी मेले का असल रंग तो यहाँ है। अक्सर देखने में आ रहा है कि मेलों को महोत्सव की चासनी में लपेट कर जिस स्वरूप को परोसने की तैयारी वर्तमान में की जाने लगी है उससे मेलों का स्वरूप ही मिल जाता है। गनीमत है पूर्णागिरी मेले के स्वरूप में बदलाव नहीं आया। इसमें मीलों से पैदल यात्री आते हैं। आजकल के सारे साधन-संसाधन होने के बावजूद बहुत दूर-दूर से यात्री जत्थ कई दिनों की यात्रा कर यहाँ आते हैं। शारदा घाट पर स्नान-ध्यान व मुण्डल संस्कार वाले भी जुटते हैं। नए होटलों की सुविधा के बावजूद धर्मशालाओं का पूरा रिवाज व भण्डारे की व्यवस्था भी देश भर के भक्तजन अपने आप से करते रहते हैं। पूर्णागिरी में अपार श्रद्धा रखने वाले पूर्णा माता और फिर नेपाल सीमा पर सिद्ध बाबा मन्दिर के दर्शन भी करते हैं।

पूर्णागिरी मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की टोली में अब ट्रैक्टर-ट्रालियों संग डीजे साउंड सिस्टम भी कानफोड़ू संगीत के साथ आने लगा है लेकिन मेले में किसी भी प्रकार के स्टार नाइट आयोजन न होना सुखद है। तथाकथित स्टार शो के रूप में इन मेलों को देखा भी नहीं जाना चाहिये। ये मेलों के अलावा लम्बी चलने वाली यात्राएं भी हैं। इतना जरूर हो गया

है सरकार चाहे जिस पार्टी की भी तो उसके मुखिया को अवसर दिया जाता है कि वह उद्घाटन करे। इस बार प्रदेश के मुखिया पुष्कर सिंह धामी ने मेले का शुभारम्भ करते हुए कहा कि केदारखण्ड के मन्दिरों को विकसित करने के साथ ही हम मानसखण्ड कॉरिडोर को भी विकसित करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। इसके अन्तर्गत गोलज्यू मन्दिर, पाताल भुवनेश्वर, कोटभ्रामरी, देवीधुरा, कैंचीधाम, बालासुन्दरी तथा माँ पूर्णागिरी सहित अनेक मन्दिरों को चिह्नित किया गया है। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर कर्तव्य पथ पर मानसखण्ड कारिडोर पर आधारित हमारी झांकी को पहली बार प्रथम पुरस्कार मिला। राज्य सरकार उत्तराखण्ड के पौराणिक धार्मिक स्थलों को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के साथ-साथ विकास के ऐसे नए-नए आयाम स्थापित करे, जिससे उत्तराखण्ड का नाम पूरे देश में गूंजे।

मेले उद्घाटन करने के अलावा सीएम ने टनकपुर-जौलजीवी रोड स्थित चरण मन्दिर से बूम तक महाकाली नदी में लगभग 12 किमी राफ्टिंग की। उसके बाद कहा कि महाकाली नदी एवं टनकपुर क्षेत्र भारत के साथ ही पूरे विश्व के नक्शे में आए इसके लिए राज्य सरकार लगातार कार्यरत है। साहसिक खेल को बढ़ावा देकर हम इस क्षेत्र को नई पहचान दिलवाना चाहते हैं। आगामी सितम्बर माह में महाकाली नदी में नेशनल राफ्टिंग प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। जिसमें विभिन्न राज्य के प्रतिभागी भाग लेंगे। इसके लिये 50 लाख की धनराशि जारी की गई है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के नए उत्तराखण्ड संकल्प में साहसिक पर्यटन प्राथमिकता है। इसी क्रम में टनकपुर क्षेत्र को भी राफ्टिंग से जोड़ने के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। श्रद्धालु तीर्थ यात्रा के साथ साहसिक गतिविधियों का भी आनन्द ले

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

विधायकों का वेतन

अल्मोड़ा में छूटे हुए राज्य आन्दोलनकारियों ने धरना प्रदर्शन शुरु करते हुए अपने चिह्निकरण की मांग तो की ही, विधायकों वेतन बढ़ने पर गुस्सा भी प्रकट किया। असल में विधायक-सांसदों को बढ़ती जा रही सुविधाओं के बाद यह सबसे सटीक उदाहरण बन चुके हैं। समझने की भी बात है कि लाखों-करोड़ों रुपये खर्च कर कुर्सी पाने वाले कितना कुछ न्यायसंगत कर पाएंगे? यही कारण है कि चारों ओर इनके वेतन-भत्तों पर सवाल उठते हैं। लेकिन मजेदार तो यह है कि आपस में लड़ने वाली पार्टियां और नेता अपनी इन सुख-सुविधाओं के लिये एकसाथ हैं।

उत्तराखण्ड में विधायकों का वेतन सांसदों के बराबर हो गया है। अब इन्हें ३.२५ लाख रुपये के हिसाब से वेतन मिलना है। इनके वेतन भत्तों में १२० प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हुई। विधेयक के तहत विधायकों के लिये होम लोन की सीमा ३० लाख से बढ़ाकार ५० लाख कर दी गई है, जबकि वाहन लोन की सीमा पूर्व की भांति १५ लाख ही रखी है।

विस अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का मासि वेतन ५४ हजार से बढ़ाकर एक लाख दस हजार किया गया है। अध्यक्ष व उपाध्यक्ष को वेतन भत्ते मिलाकर अब महीने में ३.८० लाख के करीब वेतन मिलेगा।

विधायकों का वेतन १० हजार से बढ़कर ३० हजार, विधानसभा क्षेत्र भत्ते को साठ हजार से बढ़ाकर डेढ़ लाख रुपये और कुल वेतन एक लाख सत्तावन हजार से बढ़ाकर तीन लाख पच्चीस हजार किया गया है। मंत्रियों को अब चार लाख रुपये करीब वेतन भत्ते की सुविधा है। इन सबके अलावा इन सबको आवास, रख-रखाव से लेकर चिकित्सा सुविधाएं सबकुछ है।

हमारे प्रतिनिधियों को भरपूर सुविधाएं मिलें अच्छी बात है। सवाल तक उठते हैं जब इतनी सुविधा पाने के बाद भी अधिकांश प्रतिनिधियों के तेवर बदल जाते हैं। कई तो इतने धनाड्य हैं कि उन्हें मिलने वाला आर्थिक लाभ जीरा भर लगता होगा। जो कुछ भी हो, यह सिस्टम का अपना तरीका होगा लेकिन इन माननीयों को भली भाँति जान लेना चाहिये कि आर्थिक तंगी से बहुत बड़ी आबादी दुःखी है। इनके लिये क्या सुविधाएं जुटाई जाएं, ऐसा क्या हो कि कोई भटके नहीं।

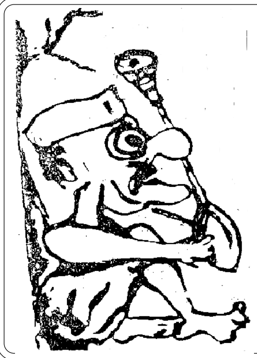

फसक

दाज्यू, सद्भाव कहने भर को रह गया ठैरा

सामने वाले को देखते ही सुड़क ले रहे हैं बल

दाज्यू, होली में सभी लोग कह रहे थे आपसी भाईचारा, सद्भाव से रहो। बुराई भगाओ, गले लगावो। दाज्यू, हमने ऐसा ही किया लेकिन उनरुवा निगलने को तैयार हो गया। अब समझ आ रहा है कि सद्भाव कहने भर को रह गया ठैरा। पूरी होली भर फेसबुक में चेपाचेप करने वाले संस्कृतिकर्मी बन गये। त्यौहार भी तो गजब का ठैरा, जैसा चाहे कर लो। कोई रोक-टोक नहीं, जिसको जैसे चाहे फतोड़ो, नंग नाचो या धड़ंग। जिसके पास कोई काम न हो, फेसबुक से मन लगा रहने वाला ठैरा। इधर का उधर करते रहो और लिख मारो- हमरी संस्कृति।

दाज्यू, चाहे कोई कुछ करे। हमें तो सभी अच्छे लगते हैं। जिसके पास जितना है वह उलटने वाला ठैरा। ऊपर-दस्त नहीं होने चाहिये बस। आजकल तो सामने वाले को देखते ही सुड़क ले रहे हैं बल। सद् और भाव का मतलब इतना भर रह गया है कि चार-सात लोग बैठकर कपोरा कपोर करें और उसे सोशल मीडिया में डाल दें। दाज्यू, कलजुग में यही सब होना है। दुनिया वालों को लगता चाहिये कि हमारी संस्कृति देश-दुनिया में कितनी दूर दूर तक फैली हुई है। दाज्यू मथुरादत्त मठपाल ज्यूक बहुत याद आती है। कहते थे- 'अपण पादण, अपणैं सुंघण'। अपना पाद कर अपने आप सूंघने का मजा भी कम नहीं हुआ।

पूर्णागिरी मेले में अवैध वसूली करने वाले इस बार भी लगे हैं बल। बाहर से आने वाले छोटे वाहनों से दो-दो स्थानों पर पार्किंग शुल्क लिये जाने से श्रद्धालुओं को गुस्सा आ गया। मेला मजिस्ट्रेट ने कह दिया है कि यदि कोई शिकायत मिली तो सख्त कार्रवाई होगी। पता नहीं कब किसका मूड बदलने लगे। उत्तराखण्ड बोर्ड की परीक्षाओं को देखते हुए शासन ने 6 महीने तक शिक्षकों और कर्मचारियों की हड़ताल पर रोक लगाई है। चुनाव भी सामने ठैरे।

दाज्यू, योजनाओं का किस प्रकार फलूदा निकल रहा है अब समझ आने लगा है। इकट्ठा एक बड़े को दे दो और उससे कहो- जितना मन करे खरोड़ता रहे। इससे पहले हिस्सा पूरा दे दे। बाजपुर के इटावा गाँव में छापामारे करने गई वन विभाग की टीम पर ग्रामीणों ने हमला कर दिया। इससे पहले ग्रामीण लकड़ी भरी ट्राली छुड़ा ले गये थे। दाज्यू, सब बाउंड्री पार मामला है......। आयुष्मान कार्ड पर मरीजों के इलाज में चकराता रोड स्थित एक निजी अस्पताल का फर्जीवाड़ा पकड़ा गया है। राज्य स्वास्थ्य प्राधिकरण के ऑडिट में यह मामला खुला। दाज्यू, हो जाने दो जाँच और ऑडिट। वरुण धवन और तापसी पन्नू भीमताल में शूटिंग कर मुम्बई लौट गए हैं। -तुम्हारा भुली झकरुवा

पूर्णागिरी मेला...

प्रथम पृष्ठ का शेष

सकेंगे। इसके स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा।

इस बार पूर्णागिरी मेले में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। दरअसल देवी दरबार में चढ़ाने वाले प्रसाद को बेचने की जिम्मेदारी दी गई है। धाम में तीन समूह- जय कालसन बाबा, नारी शक्ति, जय गुरु गोरखनाथ स्वयं सहायता समूह की महिलाएं इस कार्य में जुटी हैं। स्थानीय उत्पाद और रोजगार के लिये प्रशासन की ओर से पहले ही कहा गया था। ऐसे में महिला समूहों की सक्रियता से यह सग हो पा रहा है। जय कालसन बाबा समूह की लक्ष्मी भट्ट ने बताया कि मेला संचालन समिति की ओर से समूह को मेला स्थल पर स्टाल दिया गया है। इसके लिये समूह की ओर से महिलाओं को प्रशिक्षण भी मिला था। प्रसाद वितरण के लिये तो 2020 में ही कह दिया था परन्तु कोरोना काल के कारण मेला ही नहीं हो पाया था।

पूर्णागिरी मेले के लिये रेलवे ने एक जोड़ी मेला स्पेशल ट्रेन का संचालन शुरु किया है। पहली ट्रेन 10 मार्च की रात्रि 12 बजे कासगंज से यात्री लेकर पहुँची थी। रेलवे के पीआओ राजेन्द्र सिंह ने बताया है कि कासगंज से टनकपुर के बीच मेला स्पेशल ट्रेन का संचालन शुरु हो गया है। यह ट्रेन हर दिन सुबह 5.05 बजे कासगंज से रवाना होकर रात 12 बजे टनकपुर पहुँचेगी और टनकपुर से यह ट्रेन 2.45 बजे कासगंज के लिए रवाना होकर रात 9.45 बजे कासगंज पहुँचेगी। दूसरी ओर रोडवेज की व्यवस्था डगमग दिख रही है। कहना है कि यात्री नहीं मिल रहे। हो सकता है आने वाले दिनों में कुछ बसें चलें।

फिलहाल बढ़ती जा रही भीड़ को देखते हुए अन्य जिलों से भी पुलिस बल लगाया गया है। मेला 90 दिन का है यानी 6 जून तक मेला चलेगा। मेले के दौरान नमामि गंगे की ओर से गंगा आरती का क्रम भी बना हुआ है जिससे शारदा घाट पर खूब चहल-पहल है। पड़ोसी देश नेपाल में नो मैंस लैंड पर अतिक्रमण का अस्थाई दुकानें सज चुकी हैं। एसएसबी ने अतिक्रमणकारियों को चेतावनी दी है कि वह नियमों का उल्लंघन न करें।

महिला समूहों को अवसर

मेला स्पेशल ट्रेन

शारदा घाट गुलजार

रोडवेज डगमग

गंगा आरती

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बातचीज

गोरखा आक्रमण से बचाव में कारगर था चौकोट : चन्द्रसिंह मर्तोलिया

डॉ. पंकज उप्रेती

आज की बातचीज में हमारे साथ हैं सेवानिवृत्त रेंजर साहब चन्द्र सिंह मर्तोलिया। मर्तोली में नन्दा मन्दिर के भव्य नवनिर्माण के लिये एकदम मुस्तैद मर्तोलिया जी अपने बचपन की अनगिनत यादों के साथ जोहार नगर में रहते हैं और उनकी यही इच्छा है कि माँ नन्दा का भव्य मन्दिर के साथ चारधाम यात्रा की तरह कुमाऊँ में भी यात्रा शुरु हो।

अब जरा इनके परिवार के बारे में जान लें- मर्तोली के हरमल सिंह के चार पुत्र हुए- मंगलसिंह, मोहन सिंह, नरसिंह और नैन सिंह। इन्हीं मंगलसिंह के पुत्र हैं चन्द्र सिंह मर्तोलिया। माता का नाम हुआ उमा देवी। मोहन सिंह मर्तोलिया के सुपुत्र नरेन्द्र सिंह, हरीश सिंह और नरसिंह के सुपुत्र प्रमेन्द्र हुए।

चन्द्रसिंह जी बताते हैं कि उनका जन्म 6 जून 1941 को मर्तोली में हुआ। आफिसियल 7.11.43 है। शिक्षा मुनस्यारी में हुई। कक्षा पाँच से ग्राम देवीबगड़ (कपकोट) में पढ़ा। कक्षा 6 से 8 तक नमजला जूनियर हाईस्कूल में और फिर

जीआईसी मुनस्यारी से इण्टर किया। सन् 1961-62 में नैनीताल आये और फिर अल्मोड़ा से आईटीआई करने लगे। चन्द्र सिंह जी बताते हैं कि उनका परिवार व्यापारी परिवार है लेकिन उनकी लगन हमेशा पढ़ाई की ओर थी। इसी कारण बचपन के कई खुरापात भी याद आती हैं। देवीबगड़ में जब जंगल में भेड़-बकरियां लेकर जाता था तो अपने झोगले में छुपाए गये पत्थर से एकाद की सींग तोड़ डालता औरा यह क्रम कई दिनों तक चला। यह सब इसलिये किया कि ताकि घर वाले भेड़-बकरियों के साथ न भेजें।

अच्छे लोग और अच्छे दिनों को याद करत हुए श्री मर्तोलिया कहते हैं कि पहले लोग किसी प्रकार के छल-छद्म से दूर थे। नव युवक मंगल दल के साथ वह पहली बार नैनीताल हल्द्वानी आये थे। हमारे साथ विजय सिंह जी भी थे। सभी लोग डीएफओ हीरा सिंह पांगती के वहाँ रुके। चन्द्र सिंह बताते हैं कि अल्मोड़ा में आईटीआई पढ़ाई के दौरान वह और उनके जैसे कई युवक नरसिंहबाड़ी में प्रताप होटल में खाना खाते थे। एक दिन लंघम हास्टिल में पत्र आया और उन्हें बताया गया कि वन विभाग का कॉललेटर आया है। इसके बाद वह नौकरी के लिये निकल पड़े।

मर्तोली की खास बातों में वह गोरखा समय की बातों को बताते हैं जो उन्होंने अपने बुजुर्गों से सुनी हैं। इन्हें चुकटिया राठ (चौकोट) कहते हैं। असल में मर्तोली में एक बड़ा सा भवन बनाया गया जिसमें अन्दरखाने रास्ते थे यह चौकोर अकार का है। जब गोरखा सैनिक आक्रमण करते तो लोग इस चौकोट से होते हुए बचाव करते थे। इसी प्रकार के कई संसाधन बुजुर्गों ने इजात किये हुए थे।

ज्योतिष की बातें – 118

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई भी अन्य ग्रह राशि परिवर्तन नहीं कर रहा है। पूरे सप्ताह शनि मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में, गुरु स्वराशि मीन में, सूर्य मित्रराशि मीन में, शुक्र समराशि मेष में, मंगल शत्रुराशि मिथुन और बुध नीचराशि मीन में यथावत् गोचर करते रहेंगे। चन्द्रमा इस सप्ताह कुम्भ, मीन, मेष व वृषभ राशि में गोचर करेंगे। विशेष बात यह भी है कि सभी ग्रह इस समय मार्गी हैं। बुध अस्त चल रहा है, अन्य सभी ग्रह उदयावस्था में हैं ।

नव सम्वत्सर प्रारम्भ- चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा उदयव्यापिनी तिथि में तदनुसार बुध वार 22 मार्च 2023 को पिंगल नामक सम्वत्सर विक्रमी संवत् 2080 प्रारम्भ होगा। इस दिन ब्रह्मा ने सृष्टि प्रारम्भ की थी और राजा विक्रमादित्य के राज्याभिषेक का 2080 वाँ वर्ष प्रारम्भ होगा । इस दिन सभी को पंचांग श्रवण करना चाहिए और घरों पर पताका फहराना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 9

ध्वनि विस्फोट

धार्मिक अभिरुचि के कारण मैं पहले सत्संग, कथा, भागवत जैसे धार्मिक कार्यक्रमों में बहुत जाया करता था लेकिन अब नहीं जा पाता क्योंकि वहाँ अब आवाज बहुत तेज होने लगी है। जब भजन होता है तब तो और तेज आवाज कर दी जाती है। शादी विवाह जैसे मांगलिक कार्यक्रमों में जाना असम्भव सा हो गया है। क्योंकि आजकल कर्णप्रिय ध्वनि का जमाना चला गया है वूफर का सर्वत्र उपयोग होने लगा है जिससे बुजुर्ग लोगों को बहुत परेशानी होती है और हृदय रोगियों के लिए तो अत्यधिक घातक होता है। नवरात्रि आदि में तो कई दिनों तक रात-रात भर भयंकर आवाज को सहना पड़ता है। परीक्षाओं के दिनों में छात्रों को पढ़ना मुश्किल हो जाता है। कर्णप्रिय संगीत के स्थान पर अब कान फोड़ने वाला और हृदय को भेदने वाला भयंकर डी जे संगीत प्रचलन में आ गया है। इस कारण कान की मशीनों की बिक्री बढ़ गई है और हृदय रोगियों की संख्या भी बढ़ गई है। आज देश में क्या कोई ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो इस ध्वनि प्रदूषण को एवं इसी प्रकार के अन्यान्य प्रदूषणों को समाप्त करने की बात अपने घोषणापत्र में शामिल करें?

- सरल

लघु/कुटीर उद्योग

स्वरोजगार के विकल्प मौजूद हैं

रतन सिंह किरमोलिया

हमारा राज्य उत्तराखण्ड ही नहीं आज समूचा देश बेरोजगारी का दंश झेल रहा है। बात भी सही है कि सरकारी नौकरियां इतनी हैं नहीं कि सारे पढ़े-लिखे एवं अर्ह युवा नौकरी पा जाएं। इसके लिए सरकार को चाहिए कि सरकारी नौकरियों के अलावा स्वरोजगार की ओर भी युवाओं को अपेक्षित जानकारियां उपलब्ध करा कर जागरूक किया जाए ।

यदि इस परिप्रेक्ष्य में उत्तराखण्ड की बात की जाए तो यहाँ उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से पहाड़ में ही स्वरोजगार की छोटी-छोटी रोजगार मूलक इकाईयों की स्थापना की जा सकती है। यहाँ उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों में 'पिरूल' बहुतायत में मिल जाता है। यह 'पिरूल' यहाँ गरमियों में वनाग्नि का मुख्य कारण और कारक भी है। यदि इसका इस्तेमाल रोजगार के रूप में होने लगे तो तो वन विभाग को सबसे अधिक फायदा होगा। पहली बात आग पर स्वतरू काबू पाया जा सकता है। दूसरी बात स्थानीय ग्रामीणों को रोजगार मिलेगा। तीसरी बात सरकार को भी राजस्व मिलेगा। चौथी वनाग्नि से विभिन्न वनस्पतियों एवं वन्यजीवों को होने वाले भारी नुकसान से निजात मिल जाएगी।

'पिरूल' से पिछले कई सालों से कोयला बनाया जा रहा है। इस कोयले का उपयोग खाना बनाने के ईंधन के रूप में किया जा सकता है। यह दिनों-दिन बढ़ती कीमतों वाली रसोई गैस का एक सस्ता नायाब विकल्प के रूप में काम कर सकता है।यह विकल्प यदि सरसब्ज हो जाए तो गाँवों के हर व्यक्ति यानी महिला, पुरुष, युवक एवं युवतियों को घर बैठे रोजगार सुलभ हो सकता है। इसके अलावा पिरूल से मोटा गत्तेनुमा कागज भी प्रचुर मात्रा में बनाया जा सकता है। इस कागज का उपयोग बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों में बनने वाले माल की पैकिंग में किया जा सकता है। इसके अलावा पिरूल से अन्य कई तरह का फैंसी चीजों के निर्माण में भी किया जा रहा है। इसके अलावा कयेक जगहों में यहाँ कई प्रकार के खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। उनकी छोटी-छोटी यूनिट भी यहाँ स्थापित की जा सकती हैं।

उत्तराखड में पिछले बीस पच्चीस सालों से बंजर और आबाद भूमि में चाय की बहुत अच्छी रोजगारपरक खेती की जा रही है। उत्तराखण्ड की बोर्ड को इसके लिए सक्रिय किए जाने की जरूरत है। क्योंकि देखने में आ रहा है कि चाय की खेती में काश्तकार, चाय श्रमिक और की बोर्ड कोई विशेष तवज्जो देते नहीं दीख रहे हैं। खास कर उत्तराखंड की बोर्ड की लापरवाही से यहाँ का चाय उत्पादन घाटे का सौदा साबित हो रहा है। जबकि यहाँ की चाय बहुत उत्तम किस्म की स्वास्थ्यवर्धक बताई गई है। चाय की खेती को वन्यजीवों से भी कोई नुक्सान नहीं पहुँचाया जाता है। सरकार को चाहिए कि वह चाय की खेती पर वरीयता के साथ ध्यान दे। इसके अलावा कीवी की खेती की भी बहुत अच्छी संभावनाएं हैं। यह भी बहुत कीमती औषधीय फल है। यहाँ कयेक जगहों में इसकी खेती की जा रही है और इसका बहुत अच्छा उत्पादन हो रहा है। यह दो ढाई सौ रुपए प्रति किलोग्राम की दर से आसानी से बिक रहा है। इसकी खासियत यह है कि इसका एक औसत पेड़ चार पाँच साल बाद सौ से दो सौ किलोग्राम तक उत्पादन देता है। सगंध पौधों की भी खेती को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। जड़ी-बूटी की खेती की भी व्यापक संभावनाएं मौजूद हैं। इस ओर न हमारी सरकारों का ध्यान जा पा रहा है और न हमारे पढ़े लिखे युवाओं का रुझान ही इस ओर दिखाई दे रहा है। सरकारों का मुंह ताकने के बजाए हमारे युवा पारम्परिक थात जल, जंगल और जमीन की ओर ध्यान दें।

भारती पाण्डे पुनः चुनी गई एशिया प्रशांत क्षेत्र युवा संगठन की कोषाध्यक्ष

अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड छात्र संगठन की भारती पाण्डे एशिया प्रशान्त क्षेत्र युवा संगठन की पुनः कोषाध्यक्ष चुन ली गई हैं। एशिया प्रशान्त क्षेत्र के युवा संगठन की सचिव आया (लेबनॉन) ने समूह के माध्यम से यह घोषणा की।

ज्ञातव्य है कि एपीवाईजीएन एशिया प्रशान्त क्षेत्र के लगभग दो दर्जन देशों में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण मुद्दों पर काम कर रहे युवाओं का एक सशक्त संगठन है। उत्तराखण्ड छात्र संगठन पूर्व से ही एपीवाईजीएन के सदस्य के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय है। इस बीच दक्षिण कोरिया में जून में प्रस्तावित ग्लोबल यंग ग्रींस की कॉन्फ्रेंस में एशिया प्रशान्त क्षेत्र के युवा संगठन के प्रतिनिधि यों की भागीदारी भी रहेगी।

उत्तराखण्ड छात्र संगठन की संयोजक के रूप में भारती पाण्डे और हेमा काण्डपाल पिछले तीन वर्षों। से इस संगठन में भारतीय छात्र व युवाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि ग्राम पल्यूं में पली बढ़ी व रा.इण्टर कालेज धौलधीना की पूर्व छात्रा भारती पाण्डे सामाजिक, राजनीतिक कार्यकर्ता होने के साथ ही वर्तमान में सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग में अध्ययनम हैं।

रानीखेत की बेटी रीति सहाय ने विश्व मेजर मैराथन में मान बढ़ाया

रानीखेत। टोक्यो में हुई विश्व मेजर मैराथन (डब्लूडब्लूएमएम) प्रतियोगिता में रानीखेत की रीति सहाय ने शानदार प्रदर्शन कर प्रदेश और देश का मान बढ़ाया। रीति सहाय ने 44 साल की उम्र में यह उपलब्धि हासिल कर समाज के लिये भी प्रेरणा का कार्य किया है।

विश्व मेजर मैराथन में उपलब्धि हासिल करने वाली वह प्रदेश की की पहली महिला बन गई है। इस प्रतियोगिता की शुरुआत 2006 में हुई थी। रीति सहाय पूर्व ले. जनरल मोहन चन्द्र भण्डारी की पुत्री है। इस उपलब्धि के लिये सहाय को सभी छह मैराथन के समान सिक्स स्टार मेडल देकर सम्मानित किया गया।

मेजर मैराथन में उपलब्धि करने वाली पहली भारत की केवल 6 महिलाएं थीं। इसी वर्ष 5 मार्च को टोक्यो मैराथन के बाद रीति सहाय सहित अब उपलब्धि हासिल करने वालों की संख्या 13 हो गई है। उनकी उपलब्धि पर क्षेत्रवासियों ने बधाई दी है।

जी-20 सम्मेलन के लिये पहाड़ी थाल

हल्द्वानी। रामनगर में होने जा रहे जी-20 सम्मेलन में आने वाले विदेशी मेहमानों और भारतीय अधिकारियों के सामने पहाड़ी थाल परोसने की तैयारी है। इसमें मीठ-चावल, भुटुवा, भट की चुटकानी, झिंगोरे की खीर, कापा-भात-साग, मडुवे की रोटी, फलों के जूस में काफल और बुरांश का जूस परोसा जाएगा। जिला अधिकारी धीराज गर्ब्याल ने बताया है कि आवागमन के रास्ते को पूरी तरह पर्वतीय संस्कृति से संवारा जा रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जी-२० समिट को लेकर तैयारी, इलाके में सख्ती

रामनगर/रुद्रपुर। रामनगर में 26 से 28 मार्च को होने जा रहे जी-20 समिट को लेकर प्रशासनिक तैयारी पूरी है और सख्ती भी पर्याप्त। सम्मेलन को देखते हुए प्रशासन ने नोडल व सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किये हैं। इसके अलावा पन्तनगर एयरपोर्ट की सभी तैयारियों के लिये निदेशक मण्डी आशीष भटगई को नोडल बनाया गया है। मीडिया प्रबन्धन के लिये सहा.निदेशक मत्स्य संजय छिम्वाल को नोडल व डीआईओ अहमद नदीम को सहायक बनाया गया है। सम्मेलन में आने वाले देश-विदेश के मेहमानों के लिये विशेष व्यवस्थाओं के साथ हर प्रकार से चौकन्नापन इतना है कि रुद्रपुर, रामनगर व अन्य स्थानों पर अतिक्रमणों को लाइन से तोड़ दिया गया। हाईवे को अतिक्रमण मुक्त करने के लिये जेसीबी लगीं। रामनगर में रोडवेज के बाद चार दर्जन अतिक्रमण हटाए गए। रुद्रपुर में भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई पर मेयर ने टीम को वापस भेजा लेकिन प्रशासन के तेवर सख्त रहे।

जी-20 समिट को लेकर प्रशासन के साथ ही स्वास्थ्य विभाग भी अलर्ट मोड पर है। स्वास्थ्य विभाग ने पन्तनगर एयरपोर्ट में एक साधारण एम्बुलेंस के साथ ही दो एडवांस लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस की व्यवस्था की है। इसके अलावा जीबी पन्त विश्वविद्यालय के अस्पताल को सेफ हाउस बनाया गया है।

जी-20 समिट के आयोजन के लिये नैनीताल और उधमसिंह नगर जनपद प्रशासन सभी प्रकार की तैयारियों में लगा हुआ है। सम्मेलन में बाहर से आने वाले अतिथियों के स्वास्थ्य बिगड़ने पर उनके उपचार के लिये पर्याप्त व्यवस्था की जा चुकी है। रुद्रपुर जिला अस्पताल में दस बेड का आईसीयू तैयार किया गया है। देश-दुनिया का ध्यान इस सम्मेलन में है।

रामनगर में होने वाले आयोजन को लेकर प्रशासन किसी भी प्रकार की चूक नहीं चाहता

रुद्रपुर व्यापारियों ने विधायक को थमा दी चाबियां

रुद्रपुर। रामनगर में जी-20 सम्मेलन के लिये रुद्रपुर को भी प्रभावित होना पड़ा है। अतिक्रमण हटाओ मामले में व्यापारी भड़क गये। उन्हें विधायक शिव अरोरा पर भरोसा था। क्योंकि शिव चुनाव से लेकर अभी तक बेहद तेज-तर्रार बने हुए हैं और उन्हें भरोसा है कि तराई में अब शायद उनकी पकड़ ही सबसे ज्यादा मजबूत हो रही है। अपनी बातों और अपने तर्कों से लोगों को समझा व मना लेने वाले विधायक को इस बात का भी पता चला कि तेज-तर्रारी के अलावा भी कुछ होता है। वह कहते रह गये लेकिन सच्चाई यह है कि जी-20 के लिये प्रशासन ने जो तैयारी करनी है उसमें किसी प्रकार की ढिलाई हो ही नहीं सकती।

यहाँ एनएचएआई की ओर से हाईवे की किनारे 87 दुकानें खाली कराने का नोटिस व्यापारियों को दिया गया। इन व्यापारियों को लगता था कि तेज-तर्रार विधायक उनकी बात मनवा लेंगे और जैसा की होता है भीड़ देख नेता उनकी ओर से बोलते भी हैं। अब यह ज्यादा ही होने लगा है कि दूसरा पक्ष सुने बिना नेता विधायक अपने कार्यकर्ता-लोगों के सामने दूसरे पक्ष को सुनाने लगते हैं। लेकिन इस बार का मामला जी-20 वाला था तो कोई ढील नहीं। व्यापारी भी समझ गये मामला टेढ़ा है, उन्होंने अपनी दुकानें बन्द कर चाबी विधायक को सौंप दी। विधायक का कहना था यह मामला बेहद सम्वेदनशील है। इस पर जिलाधिकारी से बातचीज हो रही है। व्यापारियों की रोजी रोटी न छिने, इसके लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इस समस्या का स्थायी हल निकाला जाएगा। संकट की घड़ी में हम व्यापारियों के साथ खड़े हैं।

फिलहाल सम्मेलन के लिये हाईवे को सजा दिया गया है।

विधायक शिव अरोरा को समझ आ गया कि तेज-तर्रारी के अलावा भी कुछ होता है

चारधाम यात्रा : वाहनों के पंजीकरण लेकर ट्रिपकार्ड तक की सुविधा के लिए एप

परिक्रमा

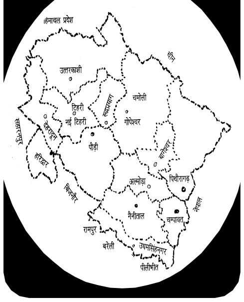

इस माह के अन्तिम सप्ताह से शुरु होने वाली चारधाम यात्रा में इ बरी ग्रीन कार्ड पंजीकरण की सुविधा है। परिवहन विभाग ने बकायदा ट्रिप कार्ड के लिए मोबाइल एप से भी आवेदन किया जा सकेगा।

चारधाम यात्रा में आने वाले यात्रियों के वाहनों के पंजीकरण से लेकर ट्रिपकार्ड तक की सुविधा के लिए परिवहन विभाग का मोबाइल एप इस बार यात्रा आसान करेगा। एनआईसी की ओर से यह एप तैयार किया गया है।

संयुक्त परिवहन आयुक्त सनत कुमार सिंह ने बताया है कि चारधाम यात्रा का मोबाइल एप इस बार होली के दौरान तैयार किया गया। मार्च के अन्तिम सप्ताह या अप्रैल के पहले सप्ताह में यह एप तीर्थयात्रियों के लिए गूगल प्ले स्टोर और एप्पल एप उपलब्ध हो जाएगा। उन्होंने बताया कि वाहनों के लिए ग्रीन कार्ड बनाने की प्रक्रिया भी मार्च के अन्तिम सप्ताह या अप्रैल के पहले सप्ताह में शुरु कर दी जाएगी।

इस बीच परिवहन विभाग ने चार धाम यात्रा में कर्मचारियों की कमी को दूर करने के लिये परिहवन विभाग कर्मचारियों की मांग की है। इसके साथ ही यात्रा के दौरान होने वाले खर्च के लिए बजट भी मांगा गया है। पिछले वर्षों में भी सरकार आउटसोर्सिंग व अन्य विभागों पर पीआरडी के जवानों को चारधाम यात्रा के लिए उपलब्ध कराती आई है। आरटीओ प्रवर्तन देहरादून शैलेश तिवारी ने बताया कि चारधाम यात्रा में प्रवर्तन टीमें भी तैनात होंगी। यह टीमें अलग-अलग क्षेत्रों में वाहनों के ग्रीन कार्ड चेक करेंगे। वाहनों के संचालन में आने वाली परेशानियों को भी दूर करने में सहयोग करेगी। बताया जा रहा है कि केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी काम द्वारा चारधाम यात्रा में आने वाले हैं।

३८वें राष्ट्रीय खेल उत्तराखण्ड में होने हैं

हल्द्वानी। भारतीय ओलम्पिक संघ (आईओए) ने आखिरकार 38वें राष्ट्रीय खेल उत्तराखण्ड में कराने का निर्णय ले ही लिया। आईओए की बैठक में उत्तराखण्ड की मेजवानी की दावेदारी को मान लिया। इसके लिये प्रदेश 2016 से तैयारी में था।

उत्तराखण्ड ओलम्पिक संघ के महासचिव डी.के. सिंह ने बताया कि भारतीय ओलम्पिक संघ के मीटिंग हॉल में हुई बैठक में पूरे प्रदेश के खेल संघों के प्रतिनिधि और राज्य ओलम्पिक संघ के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता आईओए की अध्यक्ष पी.टी. उषा ने की। देश में खेलों के विकास के अलावा अन्य प्रमुख बिन्दुओं पर भी चर्चा हुई।

इस दौरान राष्ट्रीय खेलों पर भी चर्चा हुई जिसमें तय हुआ कि सितम्बर अक्टूबर में गोवा में 37वें राष्ट्रीय खेल आयोजित किए जाएंगे। 2024 में उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय खेल होंगे। आईओए ने उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय खेलों की तैयारी परखने के लिये आईओए की संयुक्त सचिव अलकनन्दा अशोक को तात्कालिक रूप से नामित किया है। बैठक का संचालन सीईओ कल्याण चौबे ने किया।

बताते चलें कि उत्तराखण्ड 2016से प्रदेश में राष्ट्रीय खेल करवाने के लिये उत्सुक है। 2015 में केरल के बाद गोवा और उत्तराखण्ड को ये खेल कराने थे लेकिन इन दोनों ही राज्यों में अधूरी तैयारी के कारण खेल 2018 से टलते रहे। राष्ट्रीय खेलों में लगातार हो रही देरी को देखते हुए आईओए के तत्कालीन अध्यक्ष हल्द्वानी निवासी राजीव मेहता ने भारत सरकार और गुजराज सरकार से बात करके बेहद कम समय में राष्ट्रीय खेल सितम्बर 2022 में आयोजित कराए थे। इसमें 32 राज्यों में से उत्तराखण्ड 26वें स्थान पर रहा था।

दिल्ली में ओलम्पिक संघ की जनरल बॉडी की बैठक में निर्णय। २०१६ से प्रदेश तैयार भी है

होली पूजा, गीत-संगीत, खेल-कूद, पिकनिक

हल्द्वानी/अल्मोड़ा। होली के बाद अभी तक भी जगह-जगह से होली पूजा, गीत संगीत, पिकनिक की सूचना-समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

जोहार सांस्कृतिक वेलफेयर सोसाइटी द्वारा फतेहपुर में होली का सहभोज आयोजित किया जिसमें लोगों ने उत्साह पूर्व के भागीदारी की। आपसी गपशप, गीत-खेल के अलावा समाज के विकास में सक्रिय रहने का आह्वान किया गया। इससे पूर्व जोहार मिलन केन्द्र में हुई होली पूजा में एकत्रित जनों ने भागीदारी करते हुए सुख-समृद्धि की कामना की। शिवसुन्दर बैंकट हॉल में गंगा सिंह धर्मशक्तू ने अपनी माता स्व. श्रीमती कौशल्या धर्मशक्तू व पिता स्व. हयात सिंह धर्मशक्तू की पुण्य स्मृति में वालीवाल टूर्नामेंट का आयोजन भी किया। इस मैत्री मैच में चार टीमों के बीच रोचक मुकाबला हुआ।

फतेहपुर-लामाचौड़ में मंगला विहार क्षेत्र से भी होली पूजा की सूचना मिली है। जिसमें लोगों ने भागीदारी करते हुए एक-दूसरे को बधाई दी।

अल्मोड़ा में होली पूजा के अवसर पर महिला दल द्वारा होली गीत प्रस्तुत किये गये। उपस्थित लोगों ने पूजा के उपरान्त सामुहिक भोज में हिस्सा लिया। बागेश्वर से प्राप्त सूचना के अनुसार पड़ाव क्षेत्र में जुटे शौका परिवारों ने होली पूजा करते हुए एक-दूसरे को बधाई दी। कपकोट में भी परिजन जुटे।

पिथौरागढ़ पुलिस लाइन क्षेत्र में जोहार वासियों ने होली पूजा में सामुहिक एकता दिखाते हुए सहभागिता की। उत्साहित लोगों ने जोहार कालोनी, विण क्षेत्र में घूमकर बधाई दी। धरमघर में तमाम परिवारों के जुटने की सूचना है। यहाँ गोकुल सिंह पंचपाल व साथियों के साथ ही क्षेत्र में रहने वाले शौका परिवार होली पूजा के लिये साथ थे। इसी प्रकार पुंगराऊ घाटी में भगत सिंह वृजवाल के संरक्षण में तमाम परिवार जुटे और अपनी परम्पराओं को याद किया।

जोहार सांस्कृतिक वेलफेसर सोसाइटी गतिविधियों को बढ़ावा देने में सक्रिय

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गरीबों का भोजन बन रहा है अमीरों की थालियों की शान

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

पिछले कुछ वर्षों से भारत में भी जैविक के साथ मिलेट यानी मोटे अनाजों के बारे में लोगों में जागरूकता आई है और इनका उपयोग करना भी शुरू कर दिया है। कुछ दशक पहले जब गेहूँ का उत्पादन कम होता था तब बहुत बड़ी आबादी ज्वार, बाजरा, कोदो, कुटकी जैसे अनाजों पर ही निर्भर हुआ करती थी। गेहूँ और चावल तो तीज-त्यौहारों और मेहमानों के आने पर ही उपयोग किये जाते थे। उस समय मोटे अनाजों से मिलने वाली स्वास्थ्य सुरक्षा की जानकारी शायद बहुत कम ही रही होगी और यही वजह है कि धीरे-धीरे मोटे अनाजों का रकबा कम होते गया और इसके स्थान पर अन्य फसलों जैसे मक्का, सोयाबीन और तिलहन व दलहन फसलों ने ले लिया। भारत में हरित क्रांति के बाद कृषि में रासायनिक खाद, दवाई और उन्नत बीजों के साथ कृषि में मशीनीकरण और उन्नत तकनीक के चलते खाद्यान्न के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। साठ और सत्तर के दशक में भारत जहाँ विदेशों से खाद्यान्न का आयात करता था, अब पूरी तरह आत्मनिर्भर होकर निर्यातक देश बन गया है। उम्मीद की जानी चाहिये कि संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2023 को 'मोटे अनाज का अन्तरराष्ट्रीय वर्ष' घोषित किये जाने और वर्ष 2023 के दौरान मोटे अनाजों को लोकप्रिय बनाने के लिये केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा राज्यों द्वारा किये जा रहे प्रयासों के माध्यम से मोटे अनाज अधिकांश देशवासियों की थालियों में दिखाई देने लगेगा। यह स्वास्थ्य सुरक्षा के लिये भी एक क्रान्तिकारी कदम सिद्ध हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2023 को मोटे अनाज का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किये जाने से बाजरा सहित अन्य मोटे अनाजों के निर्यात में भी आशातीत वृद्धि होने की प्रबल सम्भावना बन गई है। मोटे अनाज मेंबाजरा, ज्वार, रागी, कंगनी, समा, कोदो इत्यादि आते हैं। तीन-चार दशक पहले भारत में ये मोटे अनाज भोजन के प्रमुख खाद्यान्न थे। लेकिन समय के साथ भारतीयों के भोजन में भी परिवर्तन आया। शहरों में मोटे अनाजों को ग्रामीणों और गरीबों का भोजन माना जाने लगा जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में भी भोजन का स्वाद बदलने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि मोटे अनाजों के प्रति उत्पादक किसानों का भी रूझान कम होने लगा। हरित क्रान्ति के बाद खाद्यान्न के उत्पादन में भले ही उत्पादन में जबर्दस्त इजाफा हुआ हो लेकिन पोषक तत्वों की कमी के चलते जो बीमारियों जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह, एनीमिया आदि पहले केवल शहरी क्षेत्रों में ही ज्यादा हुआ करती थीं, इन बीमारियों ने अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी पैर पसार लिये हैं। अनुसंधान केन्द्रों में हुये शोधों से जब मोटे अनाजों से स्वास्थ्य सुरक्षा के बारे में ज्ञात हुआ, इसके बाद मोटे अनाजों के प्रति जागरूकता के चलते मोटे अनाज कृषि मेलों और प्रदर्शनियों में दिखाई देने लगे। देश में मोटे अनाज यानी मिलेट्स के उत्पादों के नये-नये उद्योग भी शुरू हो गये और ये आम अनाज से खास अनाज में तब्दील होकर आम व्यक्ति की थाली के साथ खास लोगों यानी अमीरों की थालियों की भी शोभा बढ़ाने लगे। भारतीय परम्परा, संस्कृति, चलन, स्वाभाविक उत्पाद व प्रकृति द्वारा जो कुछ भी हमें दिया गया है, वह निश्चित रूप से किसी भी मनुष्य को स्वस्थ रखने में परिपूर्ण है। उन्होने कहा कि गेहूँ और चावल के साथ मोटे अनाज का भी भोजन की थाली में पुनः सम्मानजनक स्थान होना चाहिए। कोविड महामारी ने हम सभी को स्वास्थ्य व पोषण सुरक्षा के महत्व का काफी अहसास कराया है। हमारी खाद्य वस्तुओं में पोषकता का समावेश होना अत्यन्त आवश्यक है। मोटे अनाज को प्रोत्साहन वर्तमान समय की मांग भी है क्योंकि यह अनाज आधुनिक जीवन शैली में परिवर्तन के कारण सामने आ रही कई रोंगों और कुपोषण को रोकने में सक्षम है. केन्द्र गवर्नमेंट ने मोटा अनाज साल को सफल बनाने के लिए काफी समय पूर्व से ही तैयारियां प्रारम्भ कर दी थीं और अब यह सफलतापूर्वक धरातल पर उतरने को तत्पर है।

मोटे अनाज में 7 से 12 फीसदी प्रोटीन, 65 से 75 फीसदी कार्बोहाइड्रेट और 15 से 20 फीसदी डायटरी फाइबर तथा 5 फीसदी तक वसा मौजूद रहता है जिसके कारण यह कुपोषण से लड़ने में सक्षम पाया जाता है। मोटे अनाज का आयुर्वेद में भी बहुत महत्व है। भारत में सिन्धु घाटी सभ्यता के समय से ही मोटे अनाज की खेती के प्रमाण मिलते हैं तथा विश्व के 131 राष्ट्रों में इनकी खेती होती है। मोटे अनाज के अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन में हिन्दुस्तान की हिस्सेदारी 20 फीसदी और एशिया में 80 फीसदी है। ज्वार के उत्पादन में हमारा देश विश्व में प्रथम जगह पर है। पोषण के मामले में यह अनाज अन्य अनाजों-गेहूँ और धान की तुलना में बहुत आगे हैं। इनकी खेती सस्ती और कम पानी वाली होती है। मोटे अनाज का भण्डारण आसान होता है। देश भर में मोटे अनाजों का रकबा 1960 के दशक के मध्य में 3.7 करोड़ हेक्टेयर से कम होकर 2010 के मध्य में 1.4 करोड़ हेक्टेयर रह गया। आईसीआरआईएसएटी (इंटरनेशनल क्राप्स रिसर्च इंस्टीटयूट फार सेमी-एरिड ट्रापिक्स) के अनुसार भारत में बाजरे की प्रति व्यक्ति सालाना खपत 1962 के 32.9 किलोग्राम के स्तर से गिरकर 2010 में 4.2 रह गई। सवाल यह उठता है कि देश अब 'महीन' अनाज से 'मोटे' अनाज की ओर क्यों जाना चाहता है? अमीर भारतीय 'गरीब आदमी का खाना' खाने के लिए इतने उतावले क्यों हैं? क्या इसलिए कि एक के बाद एक तमाम अध्ययनों से पता चला है कि 'मोटे' अनाज स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छे हैं। कहा जाता है कि वे प्रोटीन, विटामिन और सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर, लस (ग्लूटन) मुक्त, कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (यह सूचकांक जितना कम होगा, खून में शुगर बढ़ाने में उतना ही कम सहायक होगा) वाले होते हैं। 'महीन' अनाज के विपरीत, मोटे अनाजों को ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने, कोलेस्टाल कम रखने, हृदय की रक्षा करने और पाचन स्वास्थ्य में सुधार में सहायक माना जाता है। अब जब सम्पन्न लोगों को इस बात का एहसास हो रहा है कि ये मोटे अनाज कितने फायदेमंद हैं तो वे इन्हें 'मोटा' नहीं कह रहे हैं। कुछ उन्हें बाजरा तो कुछ 'पोषक अनाज' कह रहे हैं। खाद्य व्यवसाय और सेलिब्रिटी शेफ उन्हें 'सुपरफूड' कह रहे हैं। केन्द्रीय वित्त मंत्री ने अपने 2023-24 के बजट भाषण में उन्हें 'श्री अन्न' कहा। लेकिन क्या हम इस तरह के महिमामण्डन से परे भी कुछ कर रहे हैं? 'श्री अन्न' के लिए क्या है जट के पन्नों पर बेशक 'श्री अन्न' के लिए कुछ भी न हो, केन्द्रीय वित्त मंत्री को तालियां तो मिल ही गईं। हहमारे यहाँ लोगों की अनाज को लेकर पसन्द बहुत मायने रखती है। इसी कारण कृषि का सामाजिक-आर्थिक कारकों और बाजार के साथ गहरा सम्बन्ध है। केवल चावल उगाने वाले समृद्ध किसानों की तुलना में यदि गरीब और निर्धन किसान मोटे अनाजों को वैकल्पिक फसलों के तौर पर चुनते हैं तो राष्ट्रीय स्तर पर इन अनाजों की पसन्द और उपज स्थायित्व कैसे बढ़ेगा? इसीलिए, वर्षा की बदलती परिस्थितियों के प्रति चावल उत्पादन की सम्वेदनशीलता से अवगत कराते हुए किसानों को चावल के साथ-साथ मोटे अनाज की मिश्रित फसलों के लिए प्रोत्साहित करना बेहतर विकल्प हो सकता है।हृ खाद्य उत्पादन को जलवायु परिवर्तन से पूरी तरह सुरक्षित रखना मुश्किल है।

किसानों को जलवायु के अनुकूल अनाज उत्पादनकी ओर स्थानान्तरित करने के लिए प्रोत्साहित करना इस दिशा में एक आसान पहल हो सकती है। जिस तरह चावल के उत्पादन को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक नीति और सार्वजनिक खरीद पर अमल किया गया, उसी तरह हम इसका उपयोग अनाज उत्पादन में विविधता लाने के लिए भी कर सकते हैं। कुल मिलाकर यह कहना कतई गलत नहीं होगा की मोटे अनाजों के गुणों की ओर लोगों का ध्यान ही नहीं जा रहा है। चना, मक्का, ज्वार और बाजरा तो फिर भी बाजार में यत्र-तत्र दिखाई दे जाते हैं किन्तु अन्य मोटे अनाज तो विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुके हैं। समय की माँग को देखते हुए क्या हम इन मोटे अनाजों को फिर से अपनाकर अपनी सेहत को बेहतर बनाए रखने के लिए जागरूक हो सकेंगे? इसका उत्तर तो आने वाला समय ही बता पाएगा।।

17 अप्रैल से सीमान्त बचाओ यात्रा

पिथौरागढ़। उत्तराखण्ड त्रिस्तरीय पंचायत संगठन के बैनर तले मुनस्यारी तथा धारचूला में 'सीमांत बचाओ' यात्रा 17 अप्रैल से निकाली जाएगी। मुनस्यारी तथा धारचूला को इनर लाइन की परिधि में पुनः लाने तथा भूमि की खरीद फरोख्त पर रोक लगाने की मांग के इर्दगिर्द यात्रा चलेगी। यात्रा के लिए नौलड़ा से गाला तक की दूरी तय की गई है। 243 किलोमीटर की दूरी तय करने वाली यह सीमांत क्षेत्र की पहली यात्रा है।

मुनस्यारी तथा धारचूला तहसील में एनजीओ तथा रिजोर्ट, होम स्टे, खेती के नाम पर पाँच सालों के भीतर बाहरी लोगों की आवाजाही बढ़ गई है। जनजाति तथा अनुसूचित जाति समुदाय की भूमि पर गैर कानूनी कब्जा किया जा रहा है। नियम विरुद्ध लीज किए जा रहे है। जिनका राजस्व विभाग में कोई भी लेखा जोखा नहीं है।

चीन तथा नेपाल सीमा क्षेत्र में बसे मुनस्यारी तथा धारचूला में बाहरी लोगों की बढ़ती आवाजाही राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा बन सकता है। इस आशंका से चिंतित उत्तराखण्ड त्रिस्तरीय पंचायत संगठन ने मुनस्यारी के नौलड़ा से धारचूला के गाला तक 'सीमांत बचाओ' यात्रा निकालने की घोषणा की।

संगठन के प्रदेश अध्यक्ष तथा सीमांत क्षेत्र के जिला पंचायत सदस्य जगत सिंह मर्तोलिया ने कहा कि सीमांत की आजीविका, संस्कृति एवं समाज के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए यह यात्रा ऐतिहासिक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में जमीन को लीज में लेकर खेती की ठेकेदारी के द्वार खोलना उत्तराखण्ड सरकार की सबसे बड़ी भूल है।

उन्होंने कहा कि सीमान्त क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदाय की जमीनों को नियम विरुद्ध लीज तथा स्टाम्प पेपर पर इकरार नामा बनाकर बाहरी लोगों द्वारा खरीदा जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग की भाषा में रह स्टाम्प ड्यूटी में चोरी है। इस पर दोनों पक्षों पर मुकदमा दर्ज किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि इस यात्रा के माध्यम से हम अनुसूचित जाति एवं जनजाति के अलावा सीमांत क्षेत्र में रहने वाली पिछड़ी जातियों की जमीन को सुरक्षित रखने के लिए नौलडा तथा जौलजीबी से पुनः इनर लाइन को लागू करने की मांग करेंगे। इनर लाइन लागू होने के बाद अनुसूचित जाति एवं जनजाति के साथ ही शेष समुदाय की भूमि की खरीद भी प्रतिबन्धित हो जाएगी। इस यात्रा में उत्तराखण्ड में एक सख्त भू-कानून की मांग को भी उठाया जाएगा।

वह कहते हैं कि इनर लाइन को पहले एक साजिश के तहत हटाया गया था, उसके बाद सीमांत क्षेत्र में हुई घुसपैठ की जाँच कर बाहरी लोगों को चिन्हित कर सीमांत क्षेत्र से बाहर निकालने की मांग उठायेंगे। उन्होंने कहा उत्तराखण्ड में कौसानी, चौकोड़ी, बिनसर, भीमताल, नैनीताल, मसूरी सहित चार धाम यात्रा क्षेत्र अब स्थानीय लोगों का नहीं रहा। इन क्षेत्रों में भारी घुसपैठ ने मूल निवासियों को नौकर तथा घुसपैठियों को मालिक बना दिया है। अब इनकी नजर तेजी से आदि कैलाश पर्वत तथा साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में उभर रहे मुनस्यारी तथा धारचूला पर है। यात्रा का मकसद स्थानीय लोगों को जागरूक करना भी है।

इसके लिए साहित्य भी वितरित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस यात्रा की सफलता के लिए राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से भी सहयोग लिया जाएगा।

बांसबगड तथा धारचूला में दस लाख की लागत से बनेंगे पुस्तकालय

धारचूला। जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया बांसबगड तथा धारचूला में 10 लाख रुपए की लागत से पुस्तकालय, स्टडी एवं शोध केन्द्र बनाने के जिला पंचायत बोर्ड से धनराशि स्वीकृत करा दी है। प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए यह एक नया प्लेटफार्म बनेगा। श्री मर्तोलिया ने अपनी पूर्ववर्ती घोषणा के अनुसार जिला पंचायत बोर्ड से राजकीय इण्टर कालेज बांसबगड तथा राजकीय बालिका इण्टर कालेज धारचूला के परिसर में पुस्तकालय, स्टडी एवं शोध केन्द्र के लिए 5-5 लाख रुपए जारी करवा दिया है। जिला पंचायत पिथौरागढ़ ने इसके लिए निविदाएं भी आंमत्रित कर दी है। एक माह के भीतर दोनों स्थानों पर यह नवाचार नजर आने लगेगा। इससे पूर्व जिपंस जगत मर्तोलिया ने अपने जिला पंचायत वार्ड सरमोली के अन्तर्गत राजकीय बालिका इण्टर कालेज नमजला तथा राजकीय प्राथमिक विद्यालय तिकसैन के परिसर में इस तरह के सेन्टर खोलने के लिए 9 लाख रुपए स्वीकृत कराए थे। नमजला में पुस्तकालय के लिए समस्त सामग्री पहुँच चुकी है। केवल उद्घाटन की औपचारिकता बची है। वह कहते हैं कि समुदाय के सहयोग से चलने वाला यह सेण्टर उत्तराखण्ड ही नहीं देश में पहला अभिनव प्रयोग है। इस सेंटर में प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारियां कर रहे युवाओं के लिए वर्ष भर स्व अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध रहेगी। हर माह मौक टेस्ट होगा। फिजिकल प्रतियोगिता के लिए पुलिस, भारतीय सेना, पैरा मिलिट्री के कैंप भी लगेंगे। सेन्टर का वार्षिक कैलेंडर भी बनेगा। सेंटर में हर माह कैरियर गाइडेंस के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा प्रादेशिक सेवा के अलावा अन्य सेवा के अधिकारियों को आंमत्रित किया जाएगा। प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारियां कर रहे युवाओं को डेरी, मत्स्य, हस्तशिल्प, जैविक खेती, उद्यान, मधुमक्खी पालन सहित स्वरोजगार के विषय विशेषज्ञ तथा सफल उद्यमियों को बुलाकर इसकी भी शिक्षा दी जाएगी। जिपंस जगत मर्तोलिया ने बताया कि शिक्षा विभाग तथा जिला प्रशासन को इस नवाचार में सहयोगी बनाया गया है। इसके लिए जिलाधिकारी रीना जोशी ने शिक्षा विभाग को सहयोग के लिए पत्र जारी कर दिया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाएं-

नन्दा बल्लभ पाण्डे

(अध्यक्ष गवर्नमेंट पेंशनर्स आर्गनाईजेशन)

कृष्ण कुटीर ज्योलीकोट (नैनीताल)

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व

चैत शुक्ल पक्ष

21 मार्च- अमावस्या
21 मार्च- चैत्र नवरात्र प्रारम्भ
24 मार्च- गणगौर पूजन
26 मार्च- श्रीपंचमी, रोहिणी व्रत

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)